WITWAVES
JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
Vol-2 Issue-4
(International Peer-Reviewed E-Journal)
(April 2025)

गबन उपन्यास का सामाजिक चेतना पर प्रभाव

खुशबू चौहान
शोधार्थी हिंदी विभाग

सारांश

प्रेमचन्द्र का उपन्यास गबन (1931) भारतीय समाज में नैतिक पतन, आर्थिक दबाव और उपभोक्तावाद के बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है। यह उपन्याव स्वतंत्रता पूर्व भारत की सामाजिक संरचना, परिवार में स्त्री की स्थिति और मध्यमवर्गीय समाज की मानसिकता को उजागर करता है। इस उपन्यास के माध्यम से सामाजिक चेतना के विभिन्न पक्षों की पड़ताल करता है और यह दर्शाने का प्रयास करता है कि यह उपन्यास किस प्रकार सामाजिक परिवर्तनों को प्रभावित करता है।

मुंशी प्रेमचन्द्र का गबन उपन्यास सामाजिक परिवेश में मानवीय रूपों में अत्याधिक प्रभावित होते हैं। समाज व परिवार के बिना व्यिक्त का कोई अस्तित्व नहीं है। पारिवारिक सौहार्द नारी दशा, एवं नोक-झोंक का जीवन्त निरूपंण किया है। मुंशी प्रेमचन्द्र ने गबन उपन्यास में मध्यम वर्गीय परिवार के आडम्बरों के बारे में बताया गया है। गबन उपन्यास में सामाजिक, आर्थिक बदलावों को देखा गया है। इस (गबन) उपन्यास विषयों, पात्रों और आदर्शों को वास्तिवक वातावरण में पाया गया है। प्रेमचंद्र के इस उपन्यास में राजनीतिक और सामाजिक भावना रखने वाले समाज व पीढ़ियों को देखा गया है। गबन प्रेमचंद्र का एक विशेष चिन्ताकुल विषय से संबन्धित उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से महिलाओं का पति के जीवन पर प्रभाव देखने को मिलता है। गहनों के प्रति पत्नी के लगाव का पति के जीवन पर भी प्रभाव डालता है। गबन उपन्यास के मध्येम वर्ग का वास्तविक उपन्यास किया गया है। गबन उपन्यास हमें यह संदेश देता है कि इंसान को अपनी हैसियत के अनुसार ही अपनी जरूरतों को पूरा करना चाहिए। उसका एक गलत कदम कई जिंदगियों को प्रभावित करता है। मुंशी प्रेमचंन्द्र ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, ईर्ष्या और वैमनष्यकता को दूर करने का प्रयास अपने साहित्य के द्वारा किया है। मुंशी प्रेमचन्द्र एक प्रगतिशील लेखक रहे हैं। उन्होने सामाजिक आर्थिक बदलावों को

अपने उपन्यास का केन्द्र बनाया। उन्होंने अपने आदर्शों, पात्रों और विषयों को वास्तविक दुनिया में रखा है। उनका ऐसा मानना रहा है कि मनुष्य अच्छा और नेक होता है उसे उसका वातावरण प्रभावित करता है। उनके गबन उपन्यास में वैश्याओं के नैतिक पतन और उनकी परिस्थितियों को दर्शाया गया है। प्रेमचन्द ने अपने गबन उपन्यास के माध्यम से जनसाधारण की भावनाओं का संवेदनशील मार्मिक चित्रण कर सामाजिक चेतना जगाने का प्रयास किया है। प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य में कथा सम्राट, पत्रकार, नाटककार और एक महान सम्पादक के रूप में स्थापित हैं। वे साहित्य को मनोरंजन से उपर उठाकर जीवन की गम्भीर समस्याओं और यथार्थ रूप से जोड़ते हैं। उन्होंने अपनी बात को जनता तक पहुंचाने के लिए साहित्य को चुना क्योंकि साहित्य ही जीवन की विस्तृत व्याख्या करने और उसे परिवर्तित करने में समर्थ है। उन्हों ने अपने लेखन में जो कथानक चुना है उनका आधार भारतीय नागरिक और ग्रामीण समाज के विविध वर्ग हैं। प्रेमचंद्र लेखनी के माध्यम से साम्राज्यवाद, सामन्तवाद, गांधीबाद आदि की चुनौतियों को भी स्वीकार किया।

बीजशब्द

यर्थाथवाद, प्रगतिशील, लेखक, सामाजिक, आर्थिक बदलाव, प्रेमचंद, आडम्बर, आभूषण प्रियता, मध्यमवर्गीय समाज।

प्रस्तावना

‘गबन’ प्रेमचंद्र द्वारा रचित उपन्या स है। निर्मल के बाद ‘गबन’ प्रेमचंद का दूसरा यथार्थवादी उपन्यानस है। गबन का मूल विषय- महिलाओं का पति के जीवन पर प्रभाव। इस उपन्या स में प्रेमचंद्र ने पहली नारी समस्या को व्यांपक भारतीय परिपेक्ष्य में रखकर देखा है और उसे तत्कालीन भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से जोड़कर देखा है। सामाजिक जीवन और कथा-साहित्य के लिए यह एक नई दिशा की ओर संकेत करता है। यह उपन्यास जीवन की असलियत की छानवीन अधिक गहराई से करता है भ्रम को तोड़ता है। नए रास्तेप तलाशने के लिए पाठक को नई प्रेरणां देता है।

प्रेमचंद्र समाज की उन समस्याओं को बदलने की कोशिश कर रहे थे। जो जड़-पकड़ चुकी थी और वे अपने इस उद्देश्ये को पूरा करने में सफल भी रहे। उन्होंने नारी के जीवन की विभिन्न समस्याओं जैसे- पर्दा प्रथा, बाल विवाह, विधवा जीवन, दहेज प्रथा आदि पक्षों पर विचार करते थे। वे नारी के उत्थान को राष्ट्र और समाज के उत्थान में आवश्यक मानते थे। वे अशिक्षा, जातिप्रथा, निर्धनता, संकुचित मानसिकता, अंधविश्वास और रूढ़ियों को समाज के विकास में बाधक मानते थे। समाज में किसी भी युग की परिस्थितियां ही समाज में साहित्य और साहित्य कार को जन्म देती हैं। जब साहित्यकार उस युग की परिस्थितियों से अवगत/परिचित हो तभी वह उस वातावरण और समाज से प्रभावित होकर साहित्य की रचना करता है। प्रेमचंद का समाज से हमेशा ही गहरा संबंध रहा है उनके साहित्य के पात्रों में यर्थाता थी ना की कल्पनाओं से निर्मित उन्होंने अपनी साहित्य में सभी वर्गों को समान दर्जा दिया है प्रेमचंद एक प्रगतिशील से लेखक रहे हैं सन् 1910 से सन् 1936 तक का भारतीय इतिहास उनके साहित्य में आज भी जीवित है। वे उस युग की तत्कालीन जीवन दशा, स्वतंत्रता की भावना, राष्ट्रीय जागरण व संघर्ष और देश के भविष्य को अपनी कलम से साहित्य के पन्नों पर उतार रहे थे वह तत्कालीन समय के समाज में जागृत होने वाली जन चेतना का चित्रण प्रस्तुत कर रहे थे वे समाज के जीवन स्तर और उसे समाज की सोच दोनों को इन रूढियों से मुक्त करके प्रगतिशील बनाना चाहते थे वह देश की जनता को बताना चाहते थे कि जब तक हम व्यक्तिगत रूप से उन्नतशील नहीं होंगे, तब तक कोई भी सामाजिक व्यवस्था आगे नहीं बढ़ सकती है। वे सच्चे अर्थों में भारतीय जनता के प्रतिनिधि साहित्यकार या लेखक के रूप में हमारे सामने आते रहे साहित्य में प्रेमचंद का आगमन वरदान की तरह साबित हुआ, जो एक युगांतकारी परिवर्तन को लेकर हमारे सामने आते रहे। प्रेमचंद ने न केवल वर्तमान स्थिति परिस्थितियों में लिखा बल्कि व्यवस्था को भी अपनी कलम के माध्यम से साहित्य के पन्नों पर उतारा उनकी वाणी अपने भविष्य में विश्वास रखने वाली भारतीय आम जनता की वाणी है जो आज भी कहते हुए सुनाई देती है।

“यह अंत नहीं है और आगे बड़े चलो जब तक के कर्म भूमि विजय ना हो जब तक कि देश का कायाकल्प ना हो” प्रेमचंद गरीबी के वातावरण से भली-भाँति परिचित थे। उन्होंनें अपने इस निजी अनुभव को अपनी रचनाओं के द्वारा विस्तृत धरातल पर उतार दिया। वे स्विवं गरीबी से लड़ते रहे। उनकी रचनाओं में यह लड़ाई बड़े पैमाने पर आकर देश की आजादी के रूप में

बदल गई। यही प्रेमचंद के व्यक्तित्व को सांस्कृतिक गरिमा प्रदान करता है उन्होंने जिस वर्ग के विषय में कलम चलाई, अपने व्यक्तित्व की गरिमा के अनुकूल ही उसे अंकित किया। प्रेमचंद ने अपने समय के जनमानस की कलात्मक तस्वीर को अपने उपन्यास में चित्रित किया है। प्रेमचंद आस्थावादी उपन्यासकार हैं। वे रंगभूमि में कहते हैं कि ''जीवन एक खेल है, इसे खेलो हारो तो घबराओ नहीं, जीतो तो घमंड में चूर ना हो''। उन्हें अपने सामाजिक परिवेश का पूरा अनुभव मिला निजी जीवन में पारिवारिक व विसंगतिया शिक्षा की कठिनाइयां अव्यवस्थित पारिवारिक जीवन के प्रसंग नौकरी से परित्याग, धनाभाव, फिल्मी जीवन के कटु अनुभवों में वह व्यापक धरातल पा लेते हैं। उनकी यह विशेषता है कि वह अपनी ही परिस्थितियों की परिधि में घूमते नहीं, बल्कि अपने व्यक्तिगत संदर्भ से उठकर विस्तृत प्रसंग से जुड़ने की प्रक्रिया को अपनाते हैं। सामाजिक चेतना की दृष्टि से उपन्यासों का अपना अलग ही स्थान है और समाज में हो रहे बदलाव का चित्रण करने वाले उनके उपन्यास स्त्री विमर्श के साथ-साथ सामाजिक जन जागृति को भी प्रोत्साहित करते हैं। वैसे भी समाज में जागृति ही सामाजिक चेतना है। जो परिवर्तन का संकेत देती है। इसमें मानवीय जीवन के मूल्यों की पहचान उनकी साहित्यिक रचनाओं से हुई है, साथ ही वर्तमान जीवन की विसंगतियों की छटपटाहट उनके उपन्यासों में देखने को मिलती है प्रेमचंद नारी को और उसकी अस्मिता से जुड़े सामाजिक सवालों को जीवन और परिवार के साथ जोड़कर देखने लगा और उसी की परिधि में उन सवालों के जवाबों को तलाश में लगा।

सामाजिक चेतना के विभिन्न पहलू

नैतिकता और मूल्य संकट - उपन्याव का नायक रमाकांत एक शिक्षित युवक है अपनी पत्नी जालपा की इच्छाओं को पूरा करने के लिए गबन (धोखाधड़ी) करता है। यह नैतिक पतन उस समय के समाज में बढ़ती उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को दर्शाता है। समाज में आर्थिक असमानता के कारण मध्यमवर्गीय व्यिक्त नैतिक संकट में फस जाता है। रमेश बाबू के चरित्र के माध्यम से प्रेमचंद ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार एक साधारण व्यक्ति झूठे सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण अनैतिक कार्यों की ओर बढ़ सकता है। यह उस समय की नैतिक गिरावट और सामाजिक मूल्यों के परिवर्तन को दर्शाता है।

स्त्री चेतना और नारीवाद - जालपा एक आत्म निर्भर और विचारशील महिला है, जो अंतत: समझती है कि आभूषणों से अधिक मूल्यवान सच्चाई और ईमानदारी है। यह प्रेमचंद की नारी चेतना को दर्शाता है, जहाँ महिलाएँ केवल घरेलू जीवन तक सीमित नहीं है बल्कि समाज में भूमिका को पुन: परिभाषित कर रही हैं। इस उपन्यास में नारी-जीवन का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। जालपा केवल आभूषणों के प्रति आकर्षित नहीं है, बल्कि अपने अधिकारों और निर्णयों को लेकर भी जागरूक है। उपन्यास स्त्रीं, स्वतंत्रता और पारिवारिक जीवन में उसके अधिकारों पर प्रकाश डालता है।

उपभोक्ता और समाज में बदलाव - 20 वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में भारतीय समाज में आधुनिकता और पश्चिमी प्रभाव बढ़ रहे थे। 'गबन' उपन्यास इस बदलाव को दर्शाता है, जहाँ लोग अपनी वास्त्विक आर्थिक स्थिति को नजर अंदाज कर दिखावे की दुनिया में जीना चाहते हैं। उपन्यास में समाज की उस प्रवृत्ति को दिखाया गया है जिसमें लोग अपनी आर्थिक स्थिति से अधिक ऊँचा दिखने की कोशिश में गलत रास्ते अपनाते हैं। यह प्रवृत्ति आज भी समाज में प्रांसगिक बनी हुई है।

भ्रष्टाचार और सामाजिक अन्याय- रमाकांत का गबन समाज में बढ़ती बेईमानी और भ्रष्टाचार की ओर संकेत करता है। प्रेमचंद दिखाते है कि किस प्रकार एक सामान्य व्यक्ति भी सामाजिक दबाव और व्यक्तिगत इच्छाओं के चलते अपराध कर सकता है।

निष्कर्ष

'गबन' उपन्यास केवल एक कहानी नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज का दर्पण है। इसमें प्रेमचंद ने सामाजिक चेतना को इस तरह उकेरा है कि यह आज भी प्रासंगिक लगता है। प्रेमचंद ने इस प्रेमचंद ने इस उपन्यास के माध्यम से भारतीय समाज की वास्तविकता को सामने रखा, जो आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है यह उपन्यास सामाजिक चेतना को जागृत करने और नैतिकता की ओर वापस लौटने का संदेश देता है।

अपने उपन्यासों में परिवार को यथार्थ के धरातल पर उतार खड़ा किया। उनके इस गवन उपन्यास नारी की आभूषण प्रियता और बाहरी आडंबरों को दिया गया है। वैसे हम कह सकते हैं कि मुंशी प्रेमचंद के सभी उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक बुराइयों जैसे गरीब

किसानों का शोषण, वेश्यावृत्ति, बाहरी आडंबर, समाज में दिखावा, बाल विवाह आदि बुराइयों का खंडन कर समाज को एक नई दिशा और दशा प्रदान की उन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों और कुरितियों पर प्रहार किया प्रेमचंद युग सामाजिक आर्थिक परिवर्तनों का युग कहा जा सकता है। प्रेमचंद जी साहित्य का केंद्र बिंदु मानव जीवन को मानते हैं इनका साहित्य किसी विदेशीपन से प्रभावित नहीं है बल्कि उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति और संस्कारों को सहेज कर रखा गया है। गबन उपन्यास में जो दिखाया गया है भ्रष्टाचार, आभूषण, प्रियता, बाहरी आडंबर या दिखावे के लिए लिया गया कर्ज और उससे होने वाली समस्याएं हैं जो कि आज हम वर्तमान जीवन में भी देख सकते हैं इसलिए इंसान को अपनी हैसियत के मुताबिक ही अपनी जरूरत को पूरा करना चाहिए और ऐसे दिखावे की दुनिया से बाहर आना चाहिए। गवन उपन्यास में प्रेमचंद ने मध्यम वर्गीय समाज का चित्रण प्रस्तुत करते हुए आभूषण को सामाज व्यापी रोग के रूप में भी चित्रित किया है। इस उपन्यास में उनका लक्ष्य समाज के मध्यम वर्ग के यर्थाथ जीवन को प्रस्तुत करना था।

संदर्भ सूची

1. प्रेमचंद, गबन (1931)
2. नामवर सिंह, हिंदी उपन्यास का विकास
3. रामविलासि शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग
4. अज्ञेय, भारतीय समाज और साहित्यक
5. डॉ. सरोज प्रसाद, प्रेमचंद के उपन्याकसों में समसामयिक परिस्थितियों का प्रतिफल।